राजस्थान और उत्तर प्रदेश क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में ''मिड–डे–मील योजना'' के अंतर्गत नामांकन एवं ठहराव के प्रति शिक्षक एवं अभिभावकों की अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन

शिक्षा शास्त्र में

पी.एच.डी की उपाधि हेतु

शोध प्रारूप

निर्देशिका
JV'n डॉ. मंजू शर्मा

शोधार्थी
JV'n शिव कुमारी शर्मा

शिक्षा शास्त्र संकाय
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर
2019

राजस्थान और उत्तर प्रदेश क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में ''मिड–डे–मील योजना'' के अन्तर्गत नामाकंन एवं ठहराव के प्रति शिक्षक एवं अभिभावकों की अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन

1.1 प्रस्तावना

प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में प्राथमिक शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है। यह पहली सीढ़ी है जिसे सफलतापूर्वक पार करके ही कोई राष्ट्र अभिष्ट लक्ष्य तक पहुँचता है। राष्ट्रीय जीवन के साथ जितना घनिष्ठ सम्बन्ध प्राथमिक शिक्षा का है उतना माध्यमिक या उच्च शिक्षा का नहीं है। प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा जगत की नींव है। इस आधार पर नींव का मजबूत होना आवश्यक है, क्योंकि इसी पर भावी राष्ट्रीय शिक्षा के स्वरूप का निर्माण किया गया है। चरित्र निर्माण करने में जितना महत्त्वपूर्ण स्थान प्राथमिक शिक्षा का है। उतना किसी दूसरी सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक गतिविधि का नहीं है। इसका सम्बन्ध किसी विशेष व्यक्ति या वर्ग से न होकर देश की पूरी जनसंख्या से होता है इसके हर कदम पर हर व्यक्ति के जीवन से सम्पर्क होता है और बालक ही बड़ा बनकर प्रबुद्ध नागरिक का रूप धारण करता है।

सभी बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा ही राष्ट्रीय प्रगति का मूलाधार है। इसी कारण हमारे देश में समस्त बालकों एवं बालिकाओं को निःशुल्क, अनिवार्य एवं सार्वभौमिक शिक्षा प्रदान करने का उत्तरदायित्व सरकार को सौंपा है।

शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बालक का अधिकार है। प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्य की पूर्ति के लिए विभिन्न राज्यों में नाना प्रकार की योजनाएँ जैसे– राजीव गाँधी स्वर्ण जयन्ती पाठशाला, शिक्षा आपके द्वार कार्यक्रम, शिक्षाकर्मी योजना एवं मध्याह्न मिड–डे–मील चल रही है ताकि प्राथमिक शिक्षा को उपयोगी, गतिशील एवं आनन्ददायक बनाया जा सके और बच्चों को इसे ग्रहण करने में कोई कठिनाई ना हो।

सरकार ने आजादी के बाद गाँव–गाँव में विद्यालय खोले, अध्यापक नियुक्त किए और अनेक प्रोत्साहन भी दिए, परन्तु आज छः दशक से अधिक समय बीत जाने के बाद भी राजस्थान में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्य अब भी वांछित है।

प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए शिक्षा की सभी राष्ट्रीय नीतियाँ समय–समय पर प्रभाव डालती है। मिड–डे–मील योजना एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम हैं। इस योजना के दो मुख्य उद्देश्य हैं–

– स्कूल जा रहे बच्चों में कुपोषण की स्थिति में सुधार करना।

– प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण।

स्कूलों में चलाए जा रहे कार्यक्रमों में मिड–डे–मील योजना विश्व का सबसे बड़ा कार्यक्रम है। विश्व में सर्वप्रथम जापान में स्कूली छात्रों के लिए मुफ्त मध्याह्न पोषाहार सन् 1800 ई. के अंतिम वर्षों में प्रारंभ किया गया था तथा सन् 1938 में ब्राजील में व 1946 में संयुक्त राज्य अमेरिका में शुरू किया गया।

भारत में सर्वप्रथम 1925 में तमिलनाडु राज्य ने उन स्कूली बालकों के लिए यह योजना प्रारंभ की जिनके परिवारों की मासिक आय 50 प्रतिशत से कम थी। इसे मद्रास कॉर्पोरेशन ने प्रारंभ किया।

स्कूल लंच प्रोग्राम केरल के कुछ भागों में 1941 में प्रारंभ हुआ। इसके बाद 1942 में मुम्बई में प्रारंभ किया गया। 1958–59 में पोषाहार कार्यक्रम का विस्तार किया गया और भारत सरकार, यूनिसेफ, डब्ल्यू.एच.ओ. एफ.ए.ओ. द्वारा संयुक्त रूप से स्थापित किया गया।

समस्त भारत में मध्याह्न पोषाहार कार्यक्रम 15 अगस्त 1995 से प्रारंभ किया गया। उस समय 612 करोड़ रू. की योजना को 1996–97 से 1400 करोड़ रू. तक

बढ़ाया गया। 2002 में इसका विस्तार कक्षा 1 से 5वीं तक के सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों के बच्चों के लिए किया गया।

सितम्बर 2004 से इस योजना में पका हुआ मिड–डे–मील प्रदान किया जाने लगा व नवम्बर 2007 से इस योजना का विस्तार कर कक्षा 8 तक कर दिया। अब इसमें पहली से कक्षा 8वीं तक के समस्त बच्चे सम्मिलित है।

राजस्थान में यह योजना 1 जुलाई 2002 से प्रारंभ की गई। वर्तमान में यह योजना राज्य के सभी 33 जिलों की सरकारी, स्थानीय निकायों और सरकारी सहायता प्राप्त प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालयों से ऊपर की कक्षाओं में अध्ययन करने वाले बच्चों के लिए चल रही है। शुरूआत में यह योजना कक्षा 1 से 5वीं तक के बच्चों के लिए लागू थी लेकिन 1 अप्रैल 2008 से इस योजना का विस्तार कर कक्षा 8 तक कर दिया गया है।

इस योजना के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान के प्राथमिक अवस्था में बालकों को 450 कैलोरी और 12 ग्राम प्रोटीन का मध्याह्न भोजन उपलब्ध कराया जाता है। प्राथमिक अवस्था से ऊपर के बालकों के लिए 700 कैलोरी और 20 ग्राम प्रोटीन का पोषाहार मूल्य निर्धारित किया गया है। वर्तमान में राजस्थान में 81 हजार 436 सरकारी एवं मान्यता प्राप्त अनुदानित स्कूलों में 8वीं कक्षा तक 80.71 लाख विद्यार्थियों को मिड–डे–मील दिया जा रहा है।

वर्तमान समय में पोषाहार की गुणवत्ता में सुधार लाने, भोजन को अधिक स्वादिष्ट बनाने व प्रभावी क्रियान्वयन हेतु प्रति छात्र प्रतिदिन खर्च राशि 1 अप्रैल 2012 से बढ़ाकर निम्न कर दी गई है–

कक्षा	पहले	अब (1 अप्रैल 2012 से)
कक्षा 1 से 5वीं	2.69 रू.	3.34 रु.
कक्षा 6 से 8वीं	4.06 रु.	5.00 रू.

इसके साथ सप्ताह में दिए जाने वाले मिड–डे–मील का निर्धारण निम्न प्रकार से है–

सोमवार	रोटी, सब्जी
मंगलवार	दाल, चावल
बुधवार	रोटी, सब्जी (मीठा)
गुरुवार	खिचड़ी (सभी सब्जीयुक्त)
शुक्रवार	रोटी दाल
शनिवार	रोटी सब्जी

इस योजना से ग्रामीण स्कूलों के विद्यार्थियों के नामांकन एवं ठहराव पर तथा शहरी स्कूलों के नामांकन एवं ठहराव पर क्या प्रभाव पड़ा? दोनों का तुलनात्मक अध्ययन करना ही प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य रहेगा।

(1) **वशिष्ठ, नीलिमा (2015)** ने *''राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में संचालित पोषाहार योजना का अध्ययन''* विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में लघु शोधकार्य किया।

उद्देश्य

(i) पोषाहार योजना के सैद्धान्तिक एवं वास्तविक उद्देश्य ज्ञात करना।

(ii) पोषाहार योजना की संचालन प्रक्रिया का अध्ययन करना।

(iii) पोषाहार योजना का विद्यार्थियों के नामांकन एवं ठहराव पर प्रभाव ज्ञात करना।

(iv) पोषाहार योजना के प्रति बालकों की प्रतिक्रियाओं को जानना।

विधि

सर्वेक्षण विधि

उपकरण

साक्षात्कार अनुसूची, स्वनिर्मित प्रश्नावली व अवलोकन प्रपत्र।

न्यादर्श

4 राजकीय विद्यालय (2 प्राथमिक व 2 उच्च प्राथमिक)

निष्कर्ष

(i) सभी विद्यालयों में बालकों का नामांकन एवं ठहराव सुनिश्चित करने हेतु पोषाहार योजना के अन्तर्गत पका हुआ भोजन विद्यार्थियों को वितरीत किया जाता है।

(ii) पोषाहार योजना से विद्यार्थियों के ठहराव पर प्रभाव को तीन चौथाई विद्यालयों के प्रधानाध्यापक/प्रधानाध्यापिका स्वीकार करते हैं।

(2) सेठी (2015) ने *"Mid-Day-Mealand its Impact on Improving Enrolments : A Study in Respect of Rayjada District of Orisa"* विषय पर लघु शोधकार्य किया।

उन्होंने बताया कि शहरी छात्रों को 2001 में सुखा राशन दिया जा रहा था। इस शोध में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 1994–95 में कक्षा 1 में नामांकन 18212 था यह 1995–96 में 20 प्रतिशत जबकि कुल छात्रों की वृद्धि मात्र 6. 50 प्रतिशत थी।

(3) सनाढ्य, अंचल (2016) ने *''प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण में शैक्षिक प्रायोजनाओं की भूमिका''* विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में लघु शोधकार्य किया।

उद्देश्य

(i) प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण में शैक्षिक प्रायोजनाओं की अपेक्षित भूमिका का अध्ययन करना।

(ii) विभिन्न शैक्षिक प्रायोजनाओं में कार्यरत शिक्षकों की चयन प्रक्रिया एवं कार्य प्रणाली का अध्ययन करना।

(iii) विभिन्न शैक्षिक प्रायोजनाओं के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण ज्ञात करना।

(iv) विभिन्न शैक्षिक प्रायोजनाओं के मुख्य उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण को सफल बनाने के दिशा में सुझाव प्रस्तुत करना।

विधि

आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि।

उपकरण

अभिलेख, साक्षात्कार अनुसूची।

निष्कर्ष

(i) विभिन्न शैक्षिक प्रायोजनाओं से विद्यार्थियों के नामांकन एवं ठहराव में वृद्धि हुई है।

(ii) सभी शैक्षिक प्रायोजनाओं में सबसे अधिक लोकप्रिय राजकीय विद्यालय ही रहे।

(iii) प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण में एक प्रमुख बाधा नामांकन के बाद भी विद्यार्थियों की विद्यालयों में अनुपस्थिति है।

(4) **श्रीवास्तव (2016)** ने मध्यप्रदेश के राजगढ़ जिले की प्राथमिक शालाओं की नामांकन व उपस्थिति पर मध्याह्न पोषाहार के असर के अध्ययन में पाया कि इस योजना का लड़कियों के नामांकन, उपस्थिति व ठहराव पर असर पड़ा है।

(5) **खीयाणी, बेला (2016)** ने *''गुरु मित्र योजना वैयक्तिक वृत का अध्ययन''* विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में लघुशोध कार्य किया।

उद्देश्य

(i) गुरु मित्र योजना में अध्यापनरत् शिक्षकों, प्रधानाचार्यों का शैक्षिक स्तर व व्यावसायिक स्तर ज्ञात करना।

(ii) विद्यालय की भौतिक सुविधाएँ ज्ञात करना।

(iii) गुरु मित्र योजना से सम्बन्धित मुख्य शैक्षणिक गतिविधियों का अध्ययन करना।

(iv) गुरु मित्र पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करना।

(v) सार्वजनीकरण शिक्षा के लिए इन विद्यालयों के प्रयत्नों को ज्ञात करना।

(vi) सुझावात्मक कार्यक्रम का निर्माण करना।

विधि

वैयक्तिक वृत अध्ययन विधि।

निष्कर्ष

(i) इस योजना से विद्यालय के नामांकन में वृद्धि हुई।

(ii) जन समुदाय शिक्षा के प्रति सक्रिय हुआ है।

(iii) कहानी, कविता, अभिनय से अध्यापन कार्य करवाने से बालक अधिगम में रुचि लेते हैं एवं सरलता से अधिगम हो जाता है।

अतः शोधकर्ता पोषाहार योजना द्वारा भी यह ज्ञात करने का प्रयास करेगा कि क्या इससे नामांकन एवं ठहराव पर कोई प्रभाव पड़ा है या नहीं।

(6) राठौड़, पुष्पेन्द्र सिंह (2016) ने *''शिक्षाकर्मी योजना : उपलब्धियाँ एवं समस्याएँ''* विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय से लघुशोध कार्य किया।

उद्देश्य

(i) शिक्षाकर्मी योजना के उद्देश्यों का अध्ययन करना।

(ii) शिक्षाकर्मी योजना की उपलब्धियों को ज्ञात करना।

(iii) शिक्षाकर्मी योजना की विभिन्न समस्याओं का पता लगाना।

विधि

सर्वेक्षण।

उपकरण

प्रश्नावली, साक्षात्कार।

निष्कर्ष

शिक्षाकर्मी योजना के संचालन से दुर्गम एवं सुदूर क्षेत्रो में साक्षरता में वृद्धि हुई है एवं बालिकाओं के नामांकन में वृद्धि हुई है अतः पोषाहार योजना के अध्ययन से यह ज्ञात करना है कि इस योजना से विद्यार्थियों के नामांकन एवं ठहराव पर क्या प्रभाव पड़ा है।

(7) मांडलिया, चौबीसा; नागदा (2017) ने एस.आई.ई.आर.टी. के एक शोध *''उदयपुर जिले में संचालित अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों की स्थिति एवं उनकी उपलब्धि का नामांकन पर प्रभाव''* विषय पर लघुशोध कार्य किया।

निष्कर्ष

निष्कर्ष प्राप्त हुए कि इन केन्द्रों से साक्षरता व नामांकन बढ़ाया जा सकता है तथा छात्रवृत्ति, निःशुल्क पाठ्य सामग्री, अल्पाहार, पोषाक, शैक्षिक भ्रमण आदि भी 'नामांकन वृद्धि की दिशा में सहायक कदम हो सकते हैं।

(8) खाण्डेकर (2017) ने *"A Study of Dropouts"* विषय पर शोधकार्य किया।

उद्देश्य

(i) Dropouts के अभिभावक अशिक्षित है।

(ii) Dropouts के परिवार की आर्थिक स्थिति निम्नतर थी।

(iii) Dropouts में छात्राओं का अनुपात छात्रों की अपेक्षा कम था।

(iv) अधिकांश छात्राएँ गैर आर्थिक कारणों से विद्यालय छोड़ती थी।

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण में एक प्रमुख समस्या बालकों के नामांकन एवं ठहराव की है। उपर्युक्त शोध में शोधार्थी ने उन कारणों का अध्ययन किया है जिससे बालक बीच में ही विद्यालय छोड़ देते हैं जिसका अध्ययन करना महत्त्वपूर्ण हो जाता है तभी हम प्राथमिक शिक्षा को सर्वसुलभ एवं आनन्ददायी बना पाएंगे एवं बालक विद्यालय की ओर आकर्षित होंगे एवं ठहरेंगे।

1.2 समस्या कथन

किसी भी शोधकार्य को करने के लिए समस्या कथन प्रमुख स्थान रखता है, जिसका अर्थ केवल शोध प्रबंध के शीर्षक को उल्लेखित करना मात्र नहीं है अपितु इससे संपूर्ण शोधकार्य का काल्पनिक चित्र मस्तिष्क में बन जाता है।

इस शोध के लिए निम्न समस्या का चयन किया–

राजस्थान और उत्तर प्रदेश क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में ''मिड–डे–मील योजना'' के अन्तर्गत नामाकंन एवं ठहराव के प्रति शिक्षक एवं अभिभावकों की अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन

1.3 शोध समस्या का महत्त्व एवं औचित्य

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राज्य सरकार ने अनेक प्रयास किए है। जिसमें औपचारिक शिक्षा के साथ ही अन्य योजनाएँ यथा शिक्षाकर्मी, लोक जुम्बिश जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम, शिक्षा आपके द्वार चलाए जा रहे है।

मिड–डे–मील स्कूल न आने वाले गरीब परिवारों के बच्चों के लिए एक आकर्षक एवं सउद्देश्य योजना है। शिक्षा के अनेक ऐसी योजनाएँ होती है, जिनके परिणाम काफी देर से सामने आते हैं, किन्तु इस योजना के लागू करने के परिणाम तत्काल सामने आने लगे है, अतः यह जानना जरूरी हो जाता है कि इस योजना का मुख्य उद्देश्य स्कूलों में विद्यार्थियों के नामांकन में वृद्धि एवं ठहराव ज्यादा से ज्यादा हो, को प्राप्त करने में कितना सफल रहा है? अतः इस शोध का यही औचित्य है।

1.4 शोध उद्देश्य

उद्देश्यों के निर्धारण से शोधकर्ता को एक निश्चित दिशा मिलती है चयनित समस्या के सन्दर्भ में अनुसंधित्सु द्वारा निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है–

1. उत्तर प्रदेश के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में मिड–डे–मील योजना के अन्तर्गत नामाकंन और ठहराव के प्रति शिक्षकों की अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. उत्तर प्रदेश के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में मिड–डे–मील योजना के अन्तर्गत नामाकंन और ठहराव के प्रति अभिभावकों की अभिवृति का अध्ययन करना।

3. राजस्थान के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में मिड–डे–मील योजना के अन्तर्गत नामाकंन और ठहराव के प्रति शिक्षकों की अभिवृति का अध्ययन करना।

4. राजस्थान के उच्च प्राथमिक विद्यालयो में मिड–डे–मील योजना के अन्तर्गत अभिभावकों की अभिवृति का अध्ययन करना।

1.5 शोध परिकल्पनाएँ

प्राकल्पनाओं के अभाव में शोध का सही दिशा में अग्रसर होना असंभव है। **गुड** (1972 पृ. 210) के अनुसार उपकल्पना एक चतुरतापूर्ण अनुमान तथा तथ्यों पर आधारित सुझाव है जो अवलोकन किए गए तथ्यों को परिस्थितियों की व्याख्या करनके लिए निर्मित किया जाता है तथा इसे प्रमाणित रूप में स्वीकार किया जाता है। प्राकल्पनाओं को सार्थकता परीक्षण 0.01 स्तर पर कक्षा निश्चित किया गया है।

निम्नलिखित शून्य प्राकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. उत्तर प्रदेश के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में मिड–डे–मील योजना के अन्तर्गत नामाकंन और ठहराव के प्रति शिक्षकों की अभिवृति के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

2. उत्तर प्रदेश के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में मिड–डे–मील योजना के अन्तर्गत नामाकंन और ठहराव के प्रति अभिभावकों की अभिवृति के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

3. राजस्थान के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में मिड–डे–मील योजना के अन्तर्गत नामाकंन और ठहराव के प्रति शिक्षकों की अभिवृति के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

4. राजस्थान के उच्च प्राथमिक विद्यालयो में मिड–डे–मील योजना के अन्तर्गत अभिभावकों की अभिवृति के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

1.6 शोध में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या

प्रत्येक अनुसंधानकार्य जो कि क्रमबद्ध तरीके से किया जाए उसमें ऐसा माना जाता है कि यदि सम्बन्धित शब्द जो प्रयुक्त किए जा रहे हैं उनकी स्पष्ट परिभाषा दे दी जाए तो उन शब्दों का भिन्न व्यक्ति अलग–अलग अर्थ न निकाले। इससे शोधकार्य की स्पष्टतया भी परिलक्षित होती है। अतः निम्न शब्दों को कार्य में लाया गया है तथा उनके स्पष्ट अर्थ भी दिए गए है–

(1) राजकीय विद्यालय

राजकीय विद्यालय से तात्पर्य यह है कि जिन विद्यालयों का प्रबंध भवन, पाठ्यक्रम एवं अध्यापकों की व्यवस्था के साथ–साथ वित्त व्यवस्था भी राज्य सरकार द्वारा की जा रही है। इन सारे विद्यालयों की मुख्य वार्षिक परीक्षा भी राज्य के आदेशों से जिला अथवा राज्य माध्यमिक शिक्षा बोर्ड करते हैं।

(2) उच्च प्राथमिक विद्यालय

वे विद्यालय जो राजस्थान सरकार के प्राथमिक शिक्षा विभाग से सम्बन्ध है। जहाँ पर प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 1 से 5 तक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 1 से 8 तक छात्र अध्ययन करते हैं।

(5) मिड–डे–मील कार्यक्रम

सर्वोच्च न्यायालय के आदेशानुसार अगस्त 1995 से संचालित योजना जिसमें कक्षा 1 से 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रति शैक्षणिक दिवस पर कम से कम 450 कैलोरी, 12 ग्राम प्रोटीनयुक्त पका हुआ भोजन उपलब्ध करवाया जाए। इस योजना का उद्देश्य विद्यालय में छात्र–छात्राओं के नामांकन व उपस्थिति में वृद्धि, अपव्यय एवं अवरोधन को रोकना व विद्यार्थियों के पोषक स्तर को बढ़ाना है।

(6) नामांकन

किसी पंजी, तालिका आदि में नाम लिखा जाना। किसी सूची में आए हुए बहुत से नामों में प्रत्येक नाम के साथ लगा हुआ उसका क्रमांक 1 (रोल नम्बर)

(7) ठहराव

नामांकित बालकों के ठहराव से अभिप्राय यह है कि कक्षा 1 में प्रवेश लेने वाले बालक–बालिकाएँ 5 वर्ष पश्चात् उस विद्यालय से कक्षा 5वीं उत्तीर्ण करके ही निकले। इसके लिए विद्यालय में ठहराव पंजिका का संधारण किया जाता है।

$$\text{ठहराव} = \frac{\text{कक्षा 5 में अध्ययनरत् छात्र–छात्रा + गाँव छोड़कर गए विद्यार्थी}}{\text{5 वर्ष पूर्व कक्षा 1 में पढ़ने वाले कुल विद्यार्थी}} \times 100$$

(8) ठहराव दर

यहाँ ठहराव दर से न्यादर्श एक वर्ष में एक कक्षा से अगली कक्षा में क्रमोन्नति से है।

1.7 अध्ययन का परिसीमन

किसी भी अनुसंधान के वैध व उपयोगी परिणामों को निश्चित समय में प्राप्त करने हेतु आवश्यक है कि एक निश्चित मापदण्ड में कार्य किया जाए जिससे ये कार्य वैध बन सकें व समय पर पूरा किया जा सकें। प्रस्तुत शोध में कार्य निम्न परिसीमाओं के अन्तर्गत किया गया है–

(i) यह अध्ययन राजस्थान के जयपुर जिले के उच्च प्राथमिक विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।

(ii) अध्ययन में उच्च प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा 1 से 8वीं तक के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

(iii) यह अध्ययन मिड–डे–मील लागू होने से 5 साल पहले और 2010 से 2018 तक सीमित किया गया है।

(iv) यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के उच्च प्राथमिक विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।

1.8 न्यादर्श चयन

गुड व हेट (1952 पृ. 126) के अनुसार– *"A Sample as the Name Implies Represntation of Large Whole"* शोध में निष्कर्षों का सामान्यीकरण वास्तव में न्यादर्श के आधार और इसकी प्रविधियों के चयन पर निर्भर करता है।

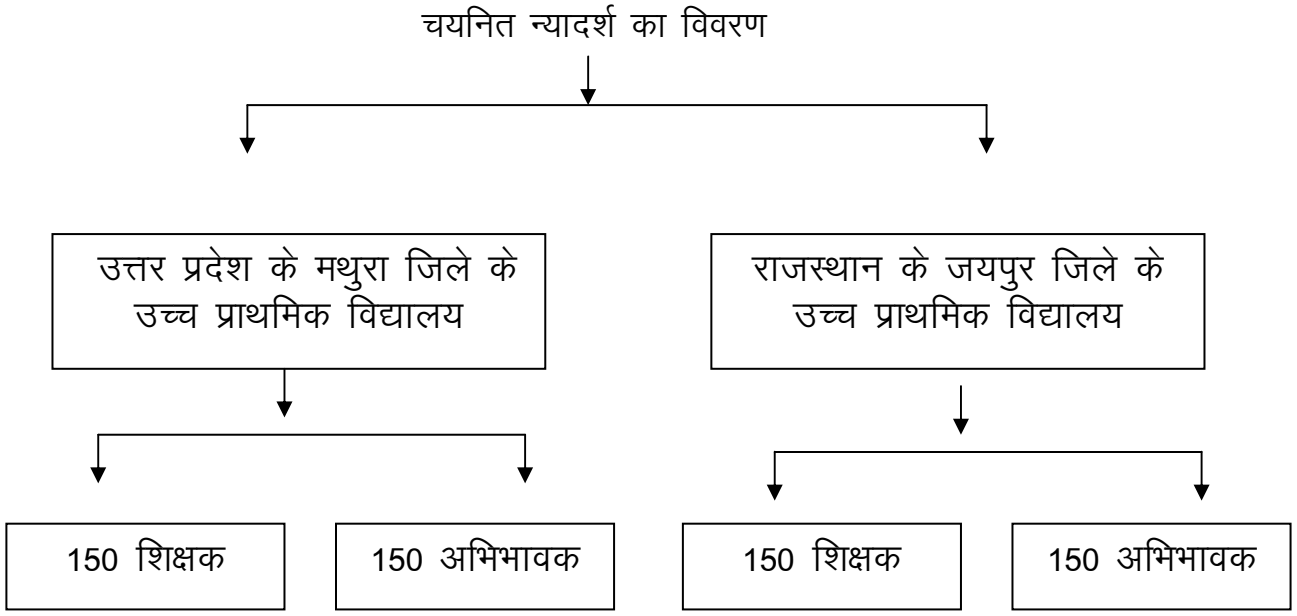

1.9 शोध विधि

प्रत्येक अनुसंधान कार्य अधिक विश्वसनीय एवं ठोस परिणामों की प्राप्ति हेतु कतिपय विधियों का चयन करता है। अनुसुंधान कार्य की सफलता में अपनराई गई विधि आधारभूत महत्व है। शिक्षा के विस्तृत क्षेत्र में उत्पन्न हुई अनेक विधियों काम में लाई जाती है। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए सर्वेक्षण विधि व यादृच्छिक विधि का उपयोग किया गया है।

1.10 उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने निम्न प्रविधियों का चयन किया है–

1.10.1 स्वनिर्मित प्रश्नावली

प्रस्तुत अध्ययन हेतु कोई भी मानकीकृत या अनुकूलित प्रश्नावली उपलब्ध नहीं होने से शोधकार्य द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया है। मिड–डे–मील का विद्यार्थियों के नामांकन एवं ठहराव पर पड़े प्रभाव का पता लगाने हेतु दत्तों के संकलन के लिए शिक्षक व अभिभावक के लिए दो प्रकार की प्रश्नावली निर्मित की गई है।

1.10.2 विद्यालयी अभिलेख

शोधकर्ता द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से अवलोकित किए जाने वाले तथ्यों का मिड–डे–मील लागू करने से पूर्व विद्यार्थियों के नामांकन एवं ठहराव व मिड–डे–मील लागू होने के पश्चात् विद्यार्थियों के नामांकन एवं ठहराव पर पड़े प्रभाव को जानने हेतु विद्यालयी अभिलेखों का अध्ययन किया गया है।

1.11 सांख्यिकी प्रविधि

शैक्षिक अनुसंधान में सांख्यिकी अनुमानों का मुख्य उद्देश्य एक न्यादर्श से जनसंख्या के बारे में सामान्यीकरण का ज्ञान प्रदान करता है। प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने तथ्यों का विभिन्न प्रविधियों के संकलन के पश्चात् व्याख्या, विश्लेषण व निष्कर्ष के लिए 'प्रतिशत' का प्रयोग किया।

1.12 शोध प्रतिवेदन का प्रारूप

अनुसंधान एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जो निश्चित सोपान के अन्तर्गत सम्पन्न होती है। बिना उचित चरणों के अनुगमन से शोधकार्य की सरलता संदिग्ध एवं अवैज्ञानिक हो जाती है। अतः प्रस्तुत शोधकार्य को पूर्ण करने हेतु शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित चरणों का अनुसरण किया गया है–

(1) प्रथम अध्याय : (अध्ययन आकल्प)

प्रस्तुत अध्याय परिचयात्मक होगा जिसमें प्रस्तावना, समस्या कथन, उद्देश्य, अध्ययन का औचित्य, अध्ययन का परिसीमन, पारिभाषिक शब्दावली, विधियाँ, प्रविधियाँ एवं उपकरण, शोध प्रारूप के चरण, शोध प्रतिवेदन, प्रस्तुतीकरण का विवेचन आदि का उल्लेख किया गया है।

(2) द्वितीय अध्याय (सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन)

इस अध्याय में शोधकार्य में प्रयुक्त सम्बन्धित साहित्य के स्रोत, देश–विदेश में किए गए शोधकार्य का संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

(3) तृतीय अध्याय (विधि, प्रविधि, उपकरण व न्यादर्श)

इस अध्याय में शोधकार्य में प्रयुक्त विधि, प्रविधि, उपकरण निर्माण, न्यादर्श एवं चयन पद्धति द्वारा प्राप्त दत्तों के विश्लेषण की विधि का वर्णन किया गया है।

(4) चतुर्थ अध्याय (दत्त संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या)

प्रस्तुत अध्याय में चयनित उपकरण एवं न्यादर्श की सहायता से प्रदत्तों का व्यवस्थीकरण, सारणीयन व आलेख किया जाएगा। साथ ही प्राप्त परिणामों का विस्तृत व सारगर्भित विश्लेषण तथा व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

(5) पंचम अध्याय (शोध सारांश, निष्कर्ष, सुझाव)

प्रस्तुत अध्याय में संपूर्ण शोध अध्ययन का सारांश, शोध से प्राप्त निष्कर्ष एवं परिणामों का शैक्षिक निहितार्थ तथा भावी शोध हेतु सुझावों का वर्णन किया गया है।

– संदर्भ ग्रंथ सूची

इस भाग में शोध को पूर्ण करने में सहायक सभी शोध ग्रंथों का, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, अन्तर्राष्ट्रीय सार आदि का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है।

– परिशिष्ट

इस भाग में शोध हेत प्रयुक्त उपकरणों, प्रारंभिक आँकड़ों व सहायक सामग्री को संलग्न किया गया है।

1.13 उपसंहार

प्रस्तुत अध्याय में अनुसंधानकार्य की समस्त योजना प्रस्तुत की गई है। इसके अन्तर्गत शोध के उद्देश्य, परिकल्पनाएँ, पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या, समस्या का

औचित्य आदि का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त न्यादर्श, दत्त संकलन में प्रयुक्त उपकरण एवं सांख्यिकीय विधियों के विषय में संक्षिप्त जानकारी दी गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

❖ BOOKS (English)

Best, J.W. (2017). Research in Education. New Delhi: Prentice Hall of India.

Good, C.V.(2016). Introduction Educational Research. Second Edition, New York : Appleton Century Crafts Ins.

Jain, T.R., Ohri, V.K. (2015). Elementary Statistics'. New Delhi : V.K. Publications.

Sukhia, S.P. (2015). Elements of Educational Research. New Delhi : Applied Publication House.

❖ BOOKS (Hindi)

अग्रवाल, जे.सी. (1995). भारत में प्राथमिक शिक्षा. नई दिल्ली : विद्या विहार।

दीक्षित, उपेन्द्रनाथ (1997). भारतीय शिक्षा की प्रयुक्त समस्याएँ. उदयपुर : पुस्तक सदन।

भटनागर, आर.पी.; भटनागर, ए.बी. (1995). शिक्षा अनुसंधान. मेरठ : लॉयल बुक डिपो।

गुप्ता, संदीप (2003). सांख्यिकीय प्रविधियाँ. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।

जैन, बी.एम. (1987). शोध–प्रविधि एवं क्षेत्रीय तकनीक. नई दिल्ली : रिसर्च पब्लिकेशन्स।

खन्ना, इन्द्रजीत; वर्मा, पन्नालाल (1976). राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान (सम्प्राप्तियाँ एवं सम्भावनाएँ. बीकानेर : शिक्षा विभाग।

कौल, लोकेश (1998). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली. दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाऊस।

मंगल, एस.के.; मंगल, शुभ्रा (2005). विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया. मेरठ : इन्टरनेशलन पब्लिशिंग।

पाण्डेय, के.पी. (1991). शैक्षिक अनुसंधान की रूपरेखा. मेरठ : अमिताभ प्रकाशन।

पाठक, पी.डी. (2006). शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।

राय, पारसनाथ (1993). अनुसंधान परिचय. आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन।

रायजादा, बी.एस. (1997). शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व. जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।

शर्मा, आर.ए. (1995). शिक्षा अनुसंधान. मेरठ : आर.लाल बुक डिपो।

सुखिया, एस.पी.; मल्होत्रा, पी.वी. (1970). शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।

त्रिपाठी, मधुसूदन (2007). शिक्षा अनुसंधान. नई दिल्ली : ओमेगा पब्लिकेशन्स।

❖ DISSERTATIONS

वशिष्ठ, नीलिमा (2003): *''राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में संचालित पोषाहार योजना का अध्ययन''*, लघुशोध प्रबंध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।

सनाढ्य, अंचल (2000): *''प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण में शैक्षिक प्रायोजनाओं की भूमिका''*, लघुशोध प्रबंध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।

खीयाणी, बेला (1998): *''गुरु मित्र योजना वैयक्तिक वृत का अध्ययन''*, लघुशोध प्रबंध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।

खाण्डेकर (1974): *"A Study of Dropouts"*, लघुशोध प्रबंध।

राठौड़, पुष्पेन्द्र सिंह (1992): *''शिक्षाकर्मी योजना : उपलब्धियाँ एवं समस्याएँ''*, लघुशोध प्रबंध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।

मांडलिया, चौबीसा; नागदा (1984): एस.आई.ई.आर.टी. के एक शोध *''उदयपुर जिले में संचालित अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों की स्थिति एवं उनकी उपलब्धि का नामांकन पर प्रभाव''*, लधुशोध प्रबंध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।

पोखरना, अर्चना (1990): *''निराश्रित बालगृह के बालकों की अध्ययन आदतें, बुद्धि लब्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन''*, लधुशोध प्रबंध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।

❖ पीएच.डी

चीनाथ, जॉय (2002): *''भारत में बालकों की वृद्धि को कम करने वाले कारकों का अध्ययन''*, पीएच.डी., दक्षिणी केलिफोर्निया विश्वविद्यालय।

लॉरिडसन, डी.ए. (2001): *''संयुक्त राज्य अमेरिका में विद्यालयों में प्राप्त मध्यान्ह भोजन में वसा एवं रेशेदार पदार्थों की मात्रा का पता लगाना''*, पीएच.डी, मिशीगन स्टेट विश्वविद्यालय।

शियून, यून (2001) ने *''भारत के विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन में पैकेटयुक्त भोजन का पोषक प्रभाव'*, पीएच.डी., प्रुर्दे विश्वविद्यालय।

❖ SURVEYS

Buch, M.B. (1983-1988): IV Survey of Research in Education. New Delhi: Vol.-I, NCERT.

Buch, M.B. (1988-1992): V Survey of Research in Education. New Delhi: Vol.-I, NCERT.

❖ DICTIONARIES

Good, C.V. (1995): Dictionary of Education. New York: McGraw Hill Book Co. (I.N.C.).

Oxford (1971): The Compact Edition of the English Dictionary. Vol.-I, Oxford University Press.

शेरजंग, निर्मला, (1970). मनोविज्ञान का पारिभाषिक शब्दकोश. न्यू दिल्ली : कन्सेप्ट पब्लिशिंग हाउस।

❖ REPORTS & JOURNALS

Mid-Day-Meal (July, 2009). Second Quarterly Evaluation and Assessment Report. (Phase-II) : SIERT

नई शिक्षा : मार्च 1996 पृ. 9–11, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

शिविरा पत्रिका : सितम्बर 2002, पृ. 34–36

शिविरा पत्रिका : मार्च 2003, पृ. 18–20

शिविरा पत्रिका : नवम्बर 2009, पृ. 14–16

राजस्थान पत्रिका, उदयपुर : 2 फरवरी 2010, पृ. 1

राजस्थान पत्रिका, उदयपुर : 22 जनवरी 2010, पृ. 20

राजस्थान पत्रिका, उदयपुर : 24 जनवरी 2010, पृ. 3

दैनिक भास्कर, उदयपुर : 22 मार्च 2010, पृ. 9

दैनिक नवज्योति, उदयपुर : 4 नवम्बर 2009, पृ. 11

लक्ष्य राजस्थान : 2008–09 पृ. सं. 90, मनु प्रकाशन, अजमेर

क्रानिकल : अक्टूबर 2009 पृ. 65

❖ WEBLIOGRAPHY

1. www.psychologicalscience.org.

2. www.lib.umd.edu.